

BHARAT ME KHADI AUR GRAMODHYOG KA TULNATMAK KARYA NISHPADAN EVAM SAMBHAVANO KA ADHYAYAN

भारत में खादी और ग्रामोद्योग का तुलनात्मक कार्य निष्पादन व सम्भावनाओं का अध्ययन

Dr. Deepa Dewangan

Assistant Professor (Commerce), Govt. Sukhram Nage College Nagri, Dist. Dhamtari (Chhattisgarh)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध में भारत में खादी व ग्रामोद्योग के कार्यों के निष्पादन में रोजगार व उत्पादन, बिक्री व लाभ अर्जन का विश्लेषणात्मक अध्ययन विषय इस बात को प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति में गांव भारत की आत्मा के प्रतीक के रूप में सर्वविदित है क्योंकि हमारी आबादी का प्रमुख हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है और हमारे देश की प्रगति गांवों के समृद्धि का पर्याय है इस संबंध में खारी ग्रामोद्योग आयोग ने वर्षों से स्थायी रोजगार के अवसर प्रदान कर वंचित ग्रामीण कारीगरों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु विभिन्न कारीगर केन्द्रित कार्यक्रमों के माध्यम से प्रभावी साधन के रूप में अपनी निहित क्षमता का प्रदर्शन किया है। खादी ग्रामोद्योग आयोग रोजगार सृजन, बिक्री योग्य वस्तुओं के उत्पादन और ग्रामीण गरीबों में आत्मा निर्भरता के सृजन के साथ–साथ भारत के गांवों का विकास सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

कुंजी शब्दः रोजगार, उत्पादन, बिक्री, अर्जन, विकास।

प्रस्तावनाः

भारत के खादी एवं ग्रामोद्योग क्षेत्र का वर्तमान स्वरूप देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है भारत में रोजगार की प्रबल सम्भावनाएं विकास की सम्भावनाओं के लक्ष्य की ओर इंकित कर देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग एक विधि निहित संस्था है जिसकी स्थापना संसद के अधिनियम (1956 के 61वें अधिनियम द्वारा तथा 1987 के अधिनियम 12 और 2006 के अधिनियम 10 द्वारा संशोधित) द्वारा हुई। इसका कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में खादी और ग्रामोद्योग के विकास में लगे अन्य अभिकरणों के साथ समन्वय करना भी है अप्रैल 1957 में स्थापित होते ही इसने भूतपूर्व अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग मंडल का कार्य अपने हाथों में लेकर अनवरत रूप से कार्य निष्पादन में अग्रसर हो रही है जिसमें लिए गए शब्द ग्रामोद्योग का अर्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित कोई भी उद्योग जो बिजली का इस्तेमाल करके या बिना इस्तेमाल किये कोई वस्तु उत्पादित करता हो या कोई सेवा करता हो शामिल है वर्तमान में ग्रामोद्योग 7 समूहों के अंर्तगत उत्पादन व सेवा प्रदान में अनवरत रूप से लगा हुआ है–

1. खनिज आधारित उद्योग
2. वन आधारित उद्योग
3. कृषि आधारित एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
4. बहुलक एवं रसायन आधारित उद्योग
5. हाथ कागज एवं रेशा उद्योग
6. ग्रामीण अभियांत्रिकी एवं जैव प्रौद्योगिकी उद्योग
7. सेवा / कपड़ा / पाली वस्त्र उद्योग

ये उद्योग ग्रामीण विकास में रत अन्य अभिकरणों के समन्वय से ग्रामीण क्षेत्रों में खादी और ग्रामोद्योगी योजना बनाने उसे विकसित करने संगठित करने और स्थापना में सहायता देने के अलावा खादी और ग्रामोद्योग आयोग की गतिविधियों के अंतर्गत इन उद्योगों में लगे कारीगरों की गतिविधियों के अंतर्गत इन उद्योंगों में लगे कारीगरों को प्रशिक्षण दिलाने और उनमें सहकारिता की भावना पैदा कर खादी ग्रामोद्योगी क्षेत्र में काम में लाई जा रही उत्पादन तकनीकों में अनुसंधान को प्रोत्साहित करने तथा विकसित करने, उत्पादकता बढ़ाने, जानलेवा श्रम को कम करने और उनकी प्रतियोगी क्षमता बढ़ाने तथा इस प्रकार अनुसंधान से प्राप्त विशेष परिणामों को दूर–दूर तक पहुंचाने के उद्देश्य से गैर परम्परागत ऊर्जा और विद्युत शक्ति इस्तेमाल भी आयोग के उत्तरदायित्व में शामिल कर विकास की नई परिभाषा रचते हुए रचनात्मक दृष्टिकोण प्रकट कर अपने मार्ग में प्रशस्त हो रहा है।

साहित्य पुर्नरावलोकनः–

(1) पाल सुभाषचंद्र आलेख कुरूक्षेत्र पत्रिका (अक्टूबर 2014)
विषयः– '' ग्रामीण भारत को स्वावलंबी बनाना खादी एवं ग्रामोद्योग''

केन्द्र सरकार का प्रयास है कि गांव के हर हाथ को काम मिले पढ़े लिखे नौजवानों के साथ ही अशिक्षित नौजवान भी किसी का मुंह ताकने के बजाय खुद का कारोबार शुरू करें। इस दिशा में खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग की महत्वपूर्ण भूमिका है इस विभाग के जरिए विभिन्न प्रशिक्षणों के जरिये युवाओं को स्वावलंबन राह दिखाई जा रही है ऐसे में प्रतिवर्ष आर्थिक तंगी झेल रहे सैकड़ों ग्रामीण नौजवान खुद का कारोबार प्रारंभ कर पा रहे हैं।

(2) सक्सेना ऋषभ कृष्ण आलेख कुरुक्षेत्र पत्रिका (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''खादी में रोजगार की संभावनाएं''

सरकार ने खादी और हथकरघा उद्योग के लिए कई योजनाओं की घोषणा की है। इनमें प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम प्रमुख है, जिसमें गैर कृषि क्षेत्रों में ग्रांमीण उद्योग लगाने के लिए ऋण में सब्सिडी का प्रावधान है। इसी प्रकार बाजार तैयार करने में सहायता के लिए एमडीए योजना आई है और खादी बुनने वाले व्यक्ति को काम करने के लिए शेड तैयार करने और उपकरण खरीदने हेतु तर्क शेड योजना के तहत वित्तीय सहायता दी जाती है। इसी प्रकार हथकरघा कलस्टर के लिए सहायता राशि भी 60 लाख रूपये से बढ़ाकर 2 करोड़ रूपये कर दी गई है। मुद्रा बैंक तो पहले से ही है जो सूक्ष्म और लघु उद्यमों को सहायता देने के लिए स्थापित किया जाता है।

(3) यादव चंद्रभान आलेख कुरूक्षेत्र पत्रिका (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''महात्मा गांधी और खादी''

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने चरखा चलाकर और सूत कातकर स्वाधीनता की जंग के साथ ही स्वावलंबन की जंग भी जीती। महात्मा गांधी की ओर से शुरू किया गया खादी का अभियान सिर्फ कपड़ों तक सीमित नहीं रहा बल्कि यह तो आजादी की लड़ाई का प्रतीक बन गया है। आज भी खादी के रूप में महात्मा गांधी का संदेश हमारे बीच मौजूद है। गांधी जी ने कहा था कि खादी एक विचार है। खादी एक संदेश है। खादी एक दर्शन है। इसी दर्शन के दम पर आज खादी के जरिए रोजगार के साधन बढ़ रहे हैं।

(4) दाधीच, बालेन्द्र शर्मा आलेख कुरूक्षेत्र (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''खादी की दुनिया का कायाकल्प कर सकता है इंटरनेट''

गांवों में ब्रांडबैंड कनेक्टिविटि पहुंच जाने से हर आमोखास ग्रामीण को दुनिया में उभरते नए अवसरों से जोड़ा जा सकेगा। खादी के क्षेत्र में कार्य करने वाले बुनकर और कारीगर भी इनमें शामिल है इंटरनेट से जुड़कर वे बेहतर तरीकों को सीख रहे हैं

(5) संगीता आलेख कुरूक्षेत्र (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करा रहा सोलर चरखा''

खादी एवं ग्रामोद्योग की ओर से महिलाओं को रोजगार दिलाने की दिशा में चरखे का भी निरंतर विकास किया जा रहा है। महिलाओं को सोलरचलित चरखा उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि उन्हें कम श्रम में अधिक लाभ मिल सकें।

(6) कश्यप, जगन्नाथ कुमार आलेख कुरूक्षेत्र (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''लघु एवं कुटीर उद्योग में रोजगार''

लघु एवं कुटीर उद्योग के माध्यम से हम भारत के दूरदराज के क्षेत्रों में रोजगार सृजित कर सकते हैं संतुलित विकास के लक्ष्य को साध सकते हैं एवं अंततः प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि कर सकते हैं। गांव–गांव तक लघु उद्योगों के प्रसार से हमारे अनुपयुक्त संसाधनों का भी अनुकूलतम उपयोग संभव हो पाएगा।

उद्देश्य :

1. खादी व ग्रामोद्योग विभाग में चल रहे कार्यक्रमों से रोजगार व अर्जन पर पड़ रहे प्रभाव का अध्ययन

2. खादी व ग्रामोद्योग विभाग में 10 वर्ष के अध्ययन कर उत्पादन व बिक्री की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

1. खादी व ग्रामोद्योग आयोग द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहे है।

2. खादी व ग्रामोद्योग आयोग द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों से उत्पादन बिक्री, रोजगार अर्जन पर सकारात्मक प्रभाव से देश विकास की प्रबल संभावनाओं की ओर अग्रसर हो रहा है।

खादी एवं ग्रामोद्योग का तुलनात्मक कार्य निष्पादन

Comparative, performance of khadi & Village Industries (Rs. - in crore and employment in lakh persons)

S.No.	Parliculars	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21
I	Proclution										
	(A) Khadi	716.98	761.93	811.08	879.99	1065.60	1401.84	1465.21	1765.51	2058.53	1668.61
	(B) polyvastra	-	-	-	-	92.84	118.89	159.67	191.70	258.94	230.51
	(C) solarvastra	-	-	-	-	-	-	1.78	6.09	6.77	5.37
	total	716.98	761.93	811.08	879.99	1158.44	1520.83	1626.66	1963.30	2324.24	1904.49
	(D) village industrees	21135.06	23262.31	25298.00	26689.39	33331.78	41110.26	46454.75	56167.04	65343.07	70330.66
	Total-I	21852.04	24024.24	26109.08	27569.37	34490.22	42631.09	48081.41	58130.30	67667.31	72235.15
II	Sales										
	(A) Khadi	967.87	1021.56	1081.04	1170.38	1510.00	2007.61	2249.18	2854.19	3634.41	3085.53
	(B) polyvastra	-	-	-	-	153.98	138.99	259.32	355.47	570.92	436.52
	(C) solarvastra	-	-	-	-	-	-	1.71	5.47	5.93	5.66
	total	967.87	1021.56	1087.04	1170.38	1663.98	2146.60	2510.21	3215.13	4211.26	3527.71
	(D) village industrees	25829.26	26818.13	30073.16	31965.52	40230.58	49991.61	56672.22	71076.96	84664.28	92213.65
	Total-II	26797.13	27839.69	31154.20	33135.90	41894.56	52138.21	59182.43	74292.09	88875.54	95741.36
III	Employment										
	(A) Khadi	10.45	10.71	10.98	11.06	11.07	4.28	4.34	4.60	4.61	4.61
	(B) polyvastra	-	-	-	-	0.50	0.28	0.29	0.30	0.30	0.30
	(C) solarvastra	-	-	-	-	-	-	0.02	0.06	0.06	0.06
	total	10.45	10.71	10.98	11.06	11.57	4.56	4.65	4.96	4.97	4.97
	(D) village industrees	108.65	114.05	119.40	123.19	126.26	131.84	135.71	142.03	147.76	154.09
	Total-III	119.10	124.76	130.38	134.25	137.83	136.40	140.36	146.99	152.73	159.06
IV	Earhing										
	(A) Khadi	449.02	459.18	469.56	483.37	604.29	730.08	761.83	916.31	1066.04	865.13
	(B) polyvastra	-	-	-	-	54.89	62.65	81.67	98.06	132.45	117.90
	(C) solarvastra	-	-	-	-	-	-	0.91	3.01	3.28	2.74
	total	449.02	459.18	469.56	483.37	659.18	792.73	844.41	1017.38	12010.77	985.77
	(D) village industrees	10034.11	10438.28	10767.09	11171.15	14820.64	18662.51	21549.79	26103.82	29412.15	31819.48
	Total-IV	10483.13	10897.46	11236.65	11654.52	15479.82	19456.24	22394.20	27121.20	30613.92	32805.25

(4) दाधीच, बालेन्द्र शर्मा आलेख कुरूक्षेत्र (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''खादी की दुनिया का कायाकल्प कर सकता है इंटरनेट''

गांवों में ब्रांडबैंड कनेक्टिविटि पहुंच जाने से हर आमोखास ग्रामीण को दुनिया में उभरते नए अवसरों से जोड़ा जा सकेगा। खादी के क्षेत्र में कार्य करने वाले बुनकर और कारीगर भी इनमें शामिल है इंटरनेट से जुड़कर वे बेहतर तरीकों को सीख रहे हैं

(5) संगीता आलेख कुरूक्षेत्र (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''महिलाओं को रोजगार उपलब्ध करा रहा सोलर चरखा''

खादी एवं ग्रामोद्योग की ओर से महिलाओं को रोजगार दिलाने की दिशा में चरखे का भी निरंतर विकास किया जा रहा है। महिलाओं को सोलरचलित चरखा उपलब्ध कराया जा रहा है ताकि उन्हें कम श्रम में अधिक लाभ मिल सकें।

(6) कश्यप, जगन्नाथ कुमार आलेख कुरूक्षेत्र (अक्टूबर 2015)
विषयः– ''लघु एवं कुटीर उद्योग में रोजगार''

लघु एवं कुटीर उद्योग के माध्यम से हम भारत के दूरदराज के क्षेत्रों में रोजगार सृजित कर सकते हैं संतुलित विकास के लक्ष्य को साध सकते हैं एवं अंततः प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि कर सकते हैं। गांव–गांव तक लघु उद्योगों के प्रसार से हमारे अनुपयुक्त संसाधनों का भी अनुकूलतम उपयोग संभव हो पाएगा।

उद्‌देश्य :

1. खादी व ग्रामोद्योग विभाग में चल रहे कार्यक्रमों से रोजगार व अर्जन पर पड़ रहे प्रभाव का अध्ययन

2. खादी व ग्रामोद्योग विभाग में 10 वर्ष के अध्ययन कर उत्पादन व बिक्री की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

1. खादी व ग्रामोद्योग आयोग द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहे है।

2. खादी व ग्रामोद्योग आयोग द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों से उत्पादन बिक्री, रोजगार अर्जन पर सकारात्मक प्रभाव से देश विकास की प्रबल संभावनाओं की ओर अग्रसर हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

I. अग्रवाल, अमित, भारत में ग्रामीण समाज, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 2007

II. अखिलेश (डॉ.) दुबे, 2006, भारत में ग्रामीण विकास एकेडमी प्रेस इलाहाबाद (उत्तरप्रदेश)

III. बघेल (डॉ.) डी.एस. उद्योग और समाज, वैल प्रिंटस प्रा.लि. भोपाल

IV. देसाई, ए.आर. (2012) भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्र, रावत पब्लिकेशन्स नई दिल्ली

V. कुरक्षेत्र पत्रिका अक्टूबर 2015

VI. KVIC का वार्षिक प्रतिवेदन

वार्षिक रिपोर्ट 2012–13, 2014–15, 2016–17, 2018–19, 2020–21

VII. उद्यमिता पत्रिका